श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्‌बोधन

राष्ट्रीय नीति के सांस्कृतिक आधार

दिनांक – 19 अक्टूबर, 2019 **समय – 10 : 30 बजे**

स्थान – होटल क्लार्क्स, जयपुर

हमारे देश भारत की राष्ट्रीयता की अवधारणा राज्य पर आधारित नहीं बल्कि संस्कृति पर आधारित रही है। प्राचीन काल में भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों में पृथक–पृथक स्वाधीन राज्य थे, परन्तु राजनीतिक दृष्टि से विभिन्न राज्यों में विभक्त होते हुए भी सांस्कृतिक दृष्टि से संपूर्ण भारतवर्ष एक राष्ट्र माना जाता रहा है, जो अपने आप में विश्व का पहला उदाहरण है। भारत की एकता एवं अखंडता का आधार इसकी सांस्कृतिक एकता है। अतः भारतीय राष्ट्रवाद की सांस्कृतिक अवधारणा और राष्ट्रीय नीति आपस में पूरक हैं।

भारतीय परंपरा व्यक्ति आधारित न होकर समाज एवं राष्ट्र आधारित रही है। हमारे यहाँ समष्टि को व्यष्टि से ऊपर माना गया है। वर्तमान में व्यक्ति आधारित विचार तंत्र का हावी होना समाज, देश और प्रकृति के समक्ष अनेकों दुविधाएँ उपस्थित कर रहा है। इस गोष्ठी में इन दुविधाओं पर विचार किया जाकर नीति निर्धारकों को उचित सुझाव दिए जायेंगे, ऐसी मुझे अपेक्षा है।

राष्ट्रीय नीति में, सांस्कृतिक आधार की दृष्टि से, संयुक्त परिवारों का भी अपना महत्व है। भले ही राष्ट्रीय नीति में एकल परिवारों के उत्थान की योजना है, लेकिन संयुक्त परिवार की व्यवस्था ही इस राष्ट्र को मजबूती प्रदान करती है, जो इस राष्ट्र की एकता के लिए नितांत आवश्यक है ।

राष्ट्रवादी व्यक्ति की एकमात्र चिंता, अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता और विकास ही होती है। राष्ट्रवादी व्यक्ति पराधीनता से घृणा करता है। वह अपने राष्ट्र से अथाह प्रेम करता है। राष्ट्र के अस्तित्व के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए वह तत्पर रहता है।

भारतीय संस्कृति के प्रेरणादायी बिन्दुओं पर विचार करें तो पाऐंगे कि हमारी संस्कृति उदार, गुणग्राही व समन्वयशील रही है। भारतीय संस्कृति के संवाहक सूत्र यथा संवेदना, कल्पना, आचरण, भाव, संयम, नैतिकता, उदारता व आत्मीयता के तत्व से हम अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं।

भारतीय संस्कृति की अन्तरात्मा एक ऐसी दिव्य परम्परा के साथ गुँथी हुई है, जिसे झुठलाना किसी के लिए भी सम्भव नहीं हो सकता। अपने दुराचरण के बारे में अनेक विवशताएँ बताकर अपने को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयत्न तो कोई व्यक्ति कर सकता है, पर अनीति को नीति कहने का साहस कोई नहीं कर सकता। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति को विश्व की कालजयी संस्कृति कहा गया है।

पर्वों, त्यौहारों और जयन्तियों की अधिकता और उन्हें उतने ही रस के साथ मनाने के तौर तरीके भारतीय संस्कृति की ऐसी विशेषता है, जिसके सहारे पंरपराओं को अपनाते रहने और उनसे प्रेरित होकर हृदयंगम करने के लिए पूरे समाज को निरंतर प्रकाश मिलता है। व्रत–उपवासों से जहाँ उदर रोगों की कारगर चिकित्सा की पृष्ठभूमि बनती है, वहीं मन की शुद्धि का भाव भी जुड़ा हुआ है। प्रत्येक शुभ कर्म के साथ अग्निहोत्र (हवन) से जुड़ा रहने के पीछे भी लोगों को यज्ञीय जीवन जीने की प्रेरणा सन्निहित है।

भारतीय सांस्कृतिक दर्शन सदैव प्रकृति का पुजारी रहा है। इसमें कहा गया है कि प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग तो करें किन्तु उसके दोहन की स्पष्ट मनाही है। शायद इसी कारण हमारे यहाँ पेड़–पौधों, नदियों–तालाबों, खेत–खलिहानों, पशु–पक्षियों, कूप–बावडियों इत्यादि को समय–समय पर पूजे जाने का विधान है।

सम्पूर्ण भारत में जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कार, रीति–रिवाज, आचार–व्यवहार और तीज–त्यौहारों में भी समानता है। 1400 बोलियों तथा औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं की विविधता के बावजूद, संगीत, कला, साहित्य नृत्य और नाट्य के मौलिक स्वरूपों में आश्चर्यजनक समानता है।

संगीत के सात स्वर और नृत्य के त्रिताल सम्पूर्ण भारत में समान रूप से प्रचलित हैं। भारत अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, मतों और पृथक–पृथक आस्थाओं एवं विश्वास का महासागर रूपी स्तम्भ है।

आपने इस अवसर पर मुझे बुलाया, इसके लिए आप सभी का आभार।

धन्यवाद। जयहिन्द।